

तारीख
हुक्म

21/6/22 पत्रावली पेश हुई वकील पक्षकारान उपर
है बहस प्रारंभ 11-2 है। अवसर
चाहा अन्तिम अवसर दिया जाकर
पत्रावली दिनांक 25/7/22 को पेश हो।

25/7/22 पत्रावली पेश हुई। वकील पक्षकारान उपस्थित है। श्रीमान
पीठासीन अधिकारी महोदय वॉरे/ अवकाश/अन्य
राजकार्य में तशरीफ रखते हैं। पत्रावली दि 2.11.22
को पेश हो।

2.11.22 पत्रावली पेश हुई वकील प्रार्थी उपर
वकील प्रार्थी की एकपक्षीय बहस प्रारंभ
11-2 हुई गयी पत्रावली वाले आदेश
दिनांक 23.11.22 को पेश हो।

23.11.22 पत्रावली पेश हुई। वकील पक्षकारान उपस्थित है। श्रीमान
पीठासीन अधिकारी महोदय वॉरे/ अवकाश/अन्य
राजकार्य में तशरीफ रखते हैं। पत्रावली दि 28.11.22
को पेश हो।

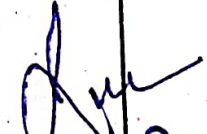
28/11/22 पत्रावली पेश हुई वकील प्रार्थी उपर
है एकपक्षीय बहस में वकील प्रार्थी
ने अपने प्रार्थना पत्र में वर्णित तथ्यों
को दोहराया। प्रार्थीगण एवं अपार्थीगण
विवादित भूमि ग्राम देह की खसरा सं.
1054, 1055, 1711, 1718, 2530, 2541, 2542,
2545 व 2549 कुल कित 9 कुल रकबा
14 बीघा 03 बिस्वा भूमि के सहखतेदार
दर्ज रिगाड ही राजस्थान काश्तकारी
अधिनियम 1955 के प्रावधानों के
अनुसार एवं राजस्व मण्डल द्वारा निर्मित
पत्रावलियों में अभिनिर्धारित सि

नम्बर
अहकाम
हुकम की ख
में जारी हुए

हुकम या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज

नम्बर व तारीख
अहकाम जो इस
हुकम की तामील
में जारी हुए

व 1964 RRD पेज 88 के अनुसार
सूधारण तथा एक सह अधिकारी किसी
दूसरे सह अधिकारी के विरुद्ध आदेश
प्राप्त नहीं कर सकता है अतः प्रथम
दृष्टया मामला प्रार्थीगण के पक्ष में
साबित नहीं होता है रिकार्ड्स सहस्रोतेकर
होने के कारण अपूर्णनीय क्षति का
बिन्दु भी प्रार्थीगण के पक्ष में साबित
नहीं होता है प्रकरण प्रथम दृष्टया एवं
अपूर्णनीय क्षति प्रार्थीगण के पक्ष में
नहीं होने से सुविधा सन्तुलन भी
प्रार्थीगण के पक्ष में साबित नहीं होता
है अतः प्रार्थना पत्र, शपथ पत्र, प्रस्तुत
राजस्व रिकार्ड, बहल वकील प्रार्थी एवं
उक्त विवेचन के आधार पर प्रार्थी का
प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा 212 RA Act
अस्वीकार किया जाकर खारिज किया
जाता है। निर्णय खुले न्यायालय में
सुनाया गया। पत्रावली बाद तकमील
मूलवाद के साथ संलग्न रहे।


उपखण्ड अधिकारी
गैजवां (गुन्दी)